मधुबन ओम् शान्ति अंक 380 मार्च 2024

पत्र-पुष्प

“निश्चयबुद्धि बन नथिंगन्यु का पाठ पक्का कर लो तो ब्रह्मा बाप समान बेफिक्र रहेंगे”

(दादी जी 19-02-2024)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा बेगमपुर के नशे वा खुशी में रहने वाले, सर्व शक्तियों से सम्पन्न, ब्राह्मण कुल की अधिकारी आत्मायें निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व बाबा के नूरे रत्न,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ शिव भोलानाथ बाबा के अलौकिक अवतरण दिवस (त्रिमूर्ति शिव जयन्ती) की बहुत-बहुत हार्दिक बधाईयां।

देखो, इस बार मार्च के महीने में शिव जयन्ती और होली का पावन पर्व है। शिवबाबा का अवतरण ही आत्माओं को होली (पावन) बना देता है। संगमयुग के यह यादगार त्योहार भक्तिमार्ग में कितना धूमधाम से मनाते हैं। इस बार हम सबने साकार महावाक्यों में सुना कि यह शिवजयन्ती ही आप बच्चों के लिए सच्ची-सच्ची दीपावली है, क्योंकि परमात्मा शिव का अवतरण होते ही आत्मा रूपी दीपक जग जाता है। अभी हम सब जगे हुए दीपक अनेक आत्माओं के दीप जगाते, अज्ञानता के अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलते हैं। तो इस महापर्व को सभी सेवाकेन्द्र/उपसेवाकेन्द्र तथा ब्रह्माकुमारीज़ पाठशालाओं पर खूब धूमधाम से मनाना है। इसके लिए मधुबन से सभी सूचनायें अलग से भेजी जा रही हैं। समय प्रमाण प्यारे बापदादा का विशेष इशारा है कि बच्चे, इस महान पर्व पर मन्सा-वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाओ, सभी को सन्देश दो। सेवाओं में कुछ नवीनता की कमाल करके जयजयकार का नारा बुलन्द करो। बोलो, यह 88 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती सभी नये उमंग, नये उत्साह के साथ खूब धूमधाम से मनायेंगे ना!

मीठे बाबा ने हम सभी बच्चों को संगमयुगी बेगमपुर का बेफिक्र बादशाह बनाया है इसलिए संकल्प में भी अब गम वा दु:ख की लहर न आये। बेगमपुर के बादशाह अर्थात् सर्व खुशियों के खजाने के मालिक। खुशियों का खजाना ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है। पाना था सो पा लिया, इसी नशे और खुशी में, सर्व प्राप्तियों के नशे में रह अपने खुशनुम: मन वाणी और कर्म से सर्व आत्माओं को खुशी का दान देना है। स्वयं को बाप-समान दु:ख-हर्ता, सुख-कर्ता बेगमपुर का बादशाह बनाना है। सदा यही रुहानी फखुर रहे कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। इस समय की सर्व प्राप्तियों का नशा, खुशी, सतयुग की बादशाही से पद्मगुणा श्रेष्ठ है, तो स्थाई रूप में इसी नशे और खुशी में रहना है।

ऐसे ही होली का पावन पर्व भी हम सबको हो ली अर्थात् बीती सो बीती कर सदा होली बनने की प्रेरणा देता है। हम सब बाबा के हो लिये तो सच्ची होली हो गई। बाबा ने अपने समान पावन बना दिया। अभी सिर्फ हमें एक दो को अपनी रूहानियत के संग का रंग लगाकर पावन बनाना है। सदा आपस में एक दो को मधुरता की मिठाई खिलाते, स्नेह और एकता के सूत्र में पिरोते हुए मंगल मिलन मनाना है। बोलो, ऐसे आध्यात्मिक रहस्यों से भरे हुए यह पावन यादगार पर्व खूब खुशी उमंग-उत्साह से मनायेंगे ना! अभी तो स्व-स्थिति और सेवा के बैलेन्स द्वारा परमात्म प्रत्यक्षता के दिन समीप लाने हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

सर्व प्राप्ति सम्पन्न बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह बनो

1) आप संगमयुगी ब्राह्मण बच्चों को बापदादा ने टाइटल दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई बातें आयें, आयेगी जरूर लेकिन आप बेगमपुर में चले जाना। बेगमपुर में बैठ जाना तो बेफिक्र बादशाह हो जायेंगे।

2) आपने आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जरूर नीचे ऊपर होगी तब तो जायेगी इसलिए कुछ भी हो आपको बेफिक्र बनना है। पुरानी दुनिया में पुराने मकान में जरूर कभी कुछ टूटेगा, कुछ गिरेगा। नथिंगन्यु। यह सब होना ही है, हो रहा है और हम बेफिक्र बादशाह।

3) जो बेफिक्र रहते हैं उनसे निर्णय भी अच्छा होता है क्योंकि उन्हें टचिंग आती है समय अनुसार अभी यह करें या नहीं करें। तो सदैव यह याद रखो - बेफिक्र बादशाह हैं, इस नशे में रहने से फिक्र की बात भी बदल जायेगी।

4) समस्याओं का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही माया को चैलेन्ज किया है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी लेकिन आप उसे निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से, नथिंगन्यु समझकर पार कर लो तो बेफिकर बादशाह रहेंगे।

5) कोई भी समस्या आपके लिए नई बात नहीं है, नथिंगन्यु क्योंकि आप अनेक बार विजयी बने हो, गम और बेगम की अभी नॉलेज है, ड्रामा में विजय निश्चित है इसलिए सदा निश्चित स्थिति में रहो तब कहेंगे बेगमपुर के बादशाह।

6) अभी सर्वशक्तियों की प्राप्ति है इसलिए बेफिकर बादशाह हो। लेकिन अगर कोई ना कोई संगदोष वा कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो बेगमपुर का नशा वा खुशी भी खो जाती है। जैसे वह बादशाह भी कंगाल बन जाते हैं, वैसे यहाँ भी माया के अधीन होने से मोहताज, कंगाल बन जाते हैं इसलिए सदा अष्ट शक्ति स्वरूप बेगमपुर का बादशाह हूँ, इस स्मृति को कब भूलना नहीं।

7) जहाँ बेगर बनना है वहाँ बादशाह नहीं बनना, जिन बातों में बादशाह बनना है वहाँ बेगर नहीं बनना। यही बुद्धि की कमाल चाहिए। जैसा समय, वैसी बात और वैसा अपना स्वरूप बना लो इसके लिए मुख्य चाहिए निर्णय करने की शक्ति और निर्णय शक्ति तब आयेगी जब अन्दर बाहर की सच्चाई और सफाई होगी।

8) भविष्य राज्य-भाग्य प्राप्त करने के पहले वर्तमान समय बेगमपुर के बादशाह हो अर्थात् संकल्प में भी गम वा दु:ख की लहर न हो क्योंकि दु:खधाम से निकल अब संगमयुग पर खड़े हो। बेगमपुर का बादशाह अर्थात् सर्व खुशियों के खजाने का मालिक। खुशियों का खजाना ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है। पाना था सो पा लिया, इसी नशे और खुशी में रहो।

9) जो सर्व प्राप्तियों के नशे में सदा हर्षित रहते हैं उनका मन वाणी और कर्म सर्व आत्माओं को खुशी का दान देता रहेगा। वह किसी भी आत्मा के प्रति बाप समान दु:खहर्ता, सुखकर्ता, सदा बेगमपुर का बादशाह अनुभव करेगा। बादशाह अर्थात् दाता।

10) जो ट्रस्टी होकर रहते हैं वह सदा बेफिकर बादशाह अर्थात् फिकर से फारिग होते हैं, उन्हें रुहानी फखुर रहता है कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। कैसे भी सरकमस्टान्सेज़ हो लेकिन वह स्वयं हल्का रहेंगे, स्वयं सदा न्यारा। जरा भी वातावरण के प्रभाव में नहीं आयेंगे।

11) सतयुगी बादशाही इस संगमयुग की बेग़मपुर की बादशाही के आगे कुछ भी नहीं है। वर्तमान समय की प्राप्ति का नशा, खुशी, सतयुग की बादशाही से पद्मगुणा श्रेष्ठ हैं तो स्थाई रूप में इसी नशे और खुशी में रहो।

12) कभी व्यर्थ संकल्पों के हेमर से समस्या के पत्थर को

तोड़ने में नहीं लगना। अब यह मजदूरी करना छोड़ो, बेगमपुर के बादशाह बनो। तो न समस्या का शब्द होगा, न बार-बार समाधान करने में समय जायेगा। यही संस्कार पुराने आपके दास बन जायेंगे, वार नहीं करेंगे। तो बादशाह बनो, तख्तनशीन बनो, ताजधारी बनो, तिलकधारी बनो।

13) संगमयुगी ब्राह्मण संसार के अधिकारी आत्मायें अर्थात् बेगमपुर के बादशाह। संकल्प में भी गम अर्थात् दु:ख की लहर न हो। बेगमपुर के बादशाह सदा सुख की शैय्या पर सुखमय संसार में स्वयं को अनुभव करो क्योंकि ब्राह्मणों के खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। अप्राप्ति दु:ख का कारण है प्राप्ति सुख का साधन है। तो सर्व प्राप्ति स्वरूप अर्थात् सुख स्वरूप स्थिति में रहो।

14) ब्राह्मण संसार में सर्व सम्बन्ध बाप के साथ अविनाशी हैं तो दु:ख की लहर कैसे होगी। सम्पत्ति में भी सर्व ख़ज़ाने वा सर्व सम्पत्ति का श्रेष्ठ ख़ज़ाना ज्ञान धन है, जिससे सर्व धन की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है। जब सम्पत्ति, सम्बन्ध सब प्राप्त हैं तो बेगमपुर के बादशाह हैं।

15) बापदादा बच्चों के दु:ख की लहर की बातें सुनकर वा देखकर सोचते हैं कि सुख के सागर के बच्चे, बेगमपुर के बादशाह फिर दु:ख की लहर कहाँ से आई! ब्राह्मण आत्मायें जहाँ भी हों दु:ख के वायुमण्डल के बीच भी कमल समान हैं। दु:ख से न्यारे, बेगमपुर के बादशाह हैं उन्हें कोई भी दु:ख की लहर, अपनी तरफ खींच नहीं सकती।

16) जो मुरलीधर बाप की मुरली सुनकर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हैं। उन्हें मुरली के साज़ से अविनाशी दुआ की दवा मिल जाती है, वे तन्दुरुस्त, मनदुरुस्त, मस्ती में मस्त हो बेपरवाह बादशाह बन जाते हैं। वे स्वयं को बाप के सर्व ख़ज़ानों के मालिक, स्वराज्य अधिकारी बेगमपुर का बादशाह अनुभव करते हैं। संगमयुग पर ही बड़े ते बड़े बादशाहों की सभा लगती है। किसी भी युग में इतने बादशाहों की सभा नहीं होती है।

17) सबसे बड़े ते बड़ा बादशाह है बेफिक्र बादशाह और सबसे बड़े ते बड़ा राज्य है बेगमपुर का राज्य। बेगमपुर के राज्य अधिकारी के आगे यह विश्व का राज्य भी कुछ नहीं है। यह बेगमपुर के राज्य का अधिकार अति श्रेष्ठ और सुखमय है। है ही बे-गम। तो सदा इसी रूहानी नशे में रहो कि हम बेग़मपुर के बादशाह हैं, नीचे नहीं आओ।

18) बेगमपुर का बादशाह अर्थात् सर्व खुशियों के खजाने का मालिक। खुशियों का खजाना ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है, इस अधिकार के कारण ही आज श्रेष्ठ आत्माओं के नाम और रूप का सत्कार होता रहता है। ऐसे बेगमपुर के बादशाह, जिन्हों का नाम लेने से ही अनेक आत्माओं के अल्पकाल के लिए दु:ख दूर हो जाते हैं, जिनके चित्रों को देखते चरित्रों का गायन करते हैं और दु:खी आत्मा खुशी का अनुभव करने लगती है, ऐसे चैतन्य आप स्वयं बेगमपुर के बादशाह हो।

19) बापदादा ने टाइटल ही दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई ऐसी बात आये, तो आप बेगमपुर में चले जाना। जहाँ ईश्वरीय फ़खुर है वहाँ फिकर हो नहीं सकता, बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह बन जाते हैं। तो आप सभी ईश्वरीय सम्पन्नता के खजाने वाले बेफिकर बादशाह हो। क्या होगा, कैसे होगा, इसका भी फिकर नहीं। त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहने वाले जानते हो जो हो रहा है वह सब अच्छा, जो होने वाला है वह और अच्छा।

20) गम और बेगम की अभी नॉलेज है, इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता है। भल बेगर हो लेकिन बेगर होते भी बेगमपुर के बादशाह हो। बादशाह अथवा राजे लोगों में ऑटोमेटिकली शक्ति रहती है राज्य चलाने की। लेकिन उस ऑटोमेटिक शक्ति को अगर सही रीति काम में नहीं लगाते, कहीं ना कहीं उल्टे कार्य में फंस जाते हैं तो राजाई की शक्ति खो लेते हैं और राज्य पद गंवा देते हैं।

21) अभी तुम बच्चे बेगमपुर के बादशाह हो और सर्वशक्तियों की प्राप्ति है लेकिन अगर कोई ना कोई संगदोष वा कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो जो बेगमपुर का नशा वा खुशी प्राप्त है वह स्वत: ही खो जाती है, इसलिए मैं अष्ट शक्ति स्वरूप बेगमपुर का बादशाह हूँ, इस स्मृति को कभी भूलना नहीं।

22) विधि और विधान को जानने वाले बच्चे हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेगमपुर

के बादशाह। भविष्य राज्य-भाग्य प्राप्त करने के पहले वर्तमान समय भी बेगमपुर के बादशाह हो। संकल्प में भी गम अर्थात् दु:ख की लहर न हो क्योंकि दु:खधाम से निकल अब संगमयुग पर खड़े हो।

23) बापदादा का हर बालक मालिक है। संगमयुग बेगमपुर, मूलवतन बेगमपुर, स्वर्ग बेगमपुर, तीनों के मालिक हो। ऐसे मालिकों के हर संकल्प सिद्ध होते हैं। ऐसी रेखा वाले सदा बेगमपुर के बादशाह होंगे। वे मुख से सदैव महावाक्य बोलेंगे। महावाक्य गिनती के होते हैं। तो दोनों एनर्जी संकल्प की और वाणी की व्यर्थ खर्च नहीं करो।

24) बेगमपुर के बादशाह सदा सुख की शैय्या पर सुखमय संसार में स्वयं को अनुभव करते हैं। ब्राह्मणों के संसार वा ब्राह्मण जीवन में दु:ख का नाम निशान नहीं क्योंकि ब्राह्मणों के खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। जब सम्पत्ति, सम्बन्ध सब प्राप्त हैं तो बेगमपुर अर्थात् संसार है। सदा सुख के संसार के बालक सो मालिक अर्थात् बादशाह हो।

25) ब्राह्मण आत्मायें जहाँ भी हैं, दु:ख के वायुमण्डल के बीच भी कमल समान, दु:ख से न्यारे, बेगमपुर के बादशाह हैं। तन की बीमारी के दु:ख की लहर वा मन में व्यर्थ हलचल के दु:ख की लहर वा विनाशी धन के अप्राप्ति की वा कमी के दु:ख की लहर, स्वयं के कमज़ोर संस्कार वा स्वभाव वा अन्य के कमज़ोर स्वभाव और संस्कार के दु:ख की लहर वायुमण्डल वा वायब्रेशन्स के आधार पर दु:ख की लहर, सम्बन्ध सम्पर्क के आधार पर दु:ख की लहर, कोई भी दु:ख की लहर अपना प्रभाव डाल नहीं सकती।

26) कभी भी कोई सेवा उदास करे, डगमग करे, हलचल में लाये तो वह सेवा नहीं है। सेवा तो उड़ाने वाली है। सेवा बेगमपुर का बादशाह बनाने वाली है। बेपरवाह बादशाह, बेगमपुर के बादशाह, जिसके पीछे सफलता स्वयं आती है। आप सुखदाता की सुख स्वरूप आत्मायें हो, सुख के सागर बाप के बच्चे हो, सदा इसी स्मृति में रहना।

27) जैसे बच्चे माँ के पास स्वत: ही जाते हैं। कितना भी अलग करो फिर भी माँ के पास जरुर जायेंगे। तो सुख शान्ति की माता है पवित्रता। जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख शान्ति खुशी स्वत: ही आती है। यह ब्राह्मण परिवार बेगमपुर अर्थात् सुख का संसार है। तो इस सुख के संसार, बेगमपुर के बादशाह बन गये। हिज़ होलीनेस भी हो, लाइट का ताज पवित्रता की निशानी है और बापदादा के दिलतख्तनशीन हो। तो सदा ताज, तख्त और तिलकधारी बनकर रहना।

28) जो सदा हर्षितमुख रहने वाली आत्मा है उनके हर संकल्प के वायब्रेशन्स द्वारा एक सेकेण्ड की रुहानी नज़र द्वारा, एक सेकेण्ड के सम्पर्क द्वारा, मुख के एक बोल द्वारा दु:खी व गम में रहने वाली आत्मा, अपने को सुखी व खुश अनुभव करेगी। उसका कर्तव्य होगा – सुख देना और सुख लेना। वे खुद भी बेफिकर बादशाह रहते हैं और दूसरों को भी अपने समान बना देते हैं।

29) बापदादा सदा बच्चों को यही कहते –''ब्राह्मण जीवन अर्थात् बेफिक्र बादशाह''। ब्रह्मा बाप बेफिक्र बादशाह बने तो क्या गीत गाया – पाना था सो पा लिया, काम बाकी क्या रहा, आप क्या कहते हो? सेवा का काम बाकी रहा हुआ है, लेकिन वह भी करावनहार बाप करा रहे हैं और कराते रहेंगे। हमको करना है – इससे बोझ हो जाता है। बाप हमारे द्वारा करा रहे हैं तो बेफिक्र हो जायेंगे।

30) सेवा में सफलता का सहज साधन ही यह है, कराने वाला करा रहा है। अगर ''मैं कर रहा हूँ'' तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो बाप सर्वशक्तिवान है। कर्म का फल भी इतना ही श्रेष्ठ मिलता है। तो सदा बाप द्वारा प्राप्त हुई बेफिक्र बादशाही वा हथेली पर स्वर्ग के राज्य-भाग्य की गॉडली गिफ्ट स्मृति में रखो।

31) बादशाह अर्थात् सदा निश्चय और नशे में स्थित रहने वाले क्योंकि निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा ऊंचा उड़ाता है। तो बेफिक्र बादशाह हो ना! कोई फिक्र है क्या? सेवा कैसे बढ़ेगी, अच्छे-अच्छे जिज्ञासु पता नहीं कब आयेंगे, कब तक सेवा करनी पड़ेगी – यह सोचते तो नहीं हो? असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रूप में अनुभव करेंगे।

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"अशरीरी अवस्था का अनुभव करने के लिए मन कन्ट्रोल में हो, बाबा से जिगरी प्यार हो" (29-11-09)

अगर बाबा हमारे मन में सदा याद रहे, दिल में समाया हुआ रहे तो हम भी बाबा की याद में बाबा के समान बन जायेंगे। बस, बाबा की याद भूलें नहीं क्योंकि हमारा कहना है कि बाबा और हम कम्बाइण्ड हैं। बापदादा हमारे साथ कम्बाइण्ड है तो अलग कैसे हो सकता है और बाबा याद है, तो ऑटोमेटिकली हमें बाबा समान अशरीरी बनने की स्मृति आती है। जितना बाबा से जिगरी दिल का प्यार होगा उतना बाबा नहीं भूलेगा। जब बाबा की याद होगी तो आत्मिक स्वरूप की स्मृति भी जरुर होगी और आत्मिक स्वरूप की स्मृति है तो अशरीरी स्थिति की भी अनुभूति जरुरी है। तो सारे दिन में हम जब अशरीरी बनने चाहें तब बन सकते हैं? मन, बुद्धि, संस्कार यह तीनों ही आत्मा की सूक्ष्म शक्तियाँ हैं लेकिन हैं मेरी, मैं इसका मालिक हूँ। तो सारे दिन में बीच-बीच में चेक करना चाहिए कि सचमुच मैं मालिक होकर मन, बुद्धि, संस्कार को चलाने वाली हूँ, इस स्थिति में स्थित रहती हूँ? ऐसे ही मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ... यह भी मंत्र मुआफिक नहीं जपो, इसका मनन करो।

हम सिर्फ कर्मकर्ता नहीं हैं, कर्मयोगी हैं। कर्म और योग हमारा साथ-साथ है। कर्मयोगी माना आत्मा करावनहार हो करके कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही है। तो अगर हम यह मालिकपन की स्मृति रखते हैं कि मैं आत्मा मालिक हूँ, मालिक होकर कोई भी कर्म करते हैं तो हमारे में कन्ट्रोलिंग पॉवर आती है। मैं आत्मा हूँ लेकिन कराने वाली हूँ कर्मकर्ता हूँ, इस स्मृति की आदत अगर होगी तो जब चाहे अशरीरी होना इज़ी लगेगा क्योंकि राजा माना कन्ट्रोलिंग पॉवर और रूलिंग पॉवर। जैसे आर्डर से चलावे, अगर हमारी स्मृति में रहेगा कि हम स्वराज्य अधिकारी हैं, तो यह देह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगी। अशरीरी माना शरीर भूल जावे नहीं लेकिन शरीर का मालिक होके शरीर से कर्म करायें। इसके लिए सारे दिन में बीच-बीच में समय निकाल करके अपने आपको चेक करते ड्रिल करते जाओ, तो चेक और चेंज का लिंक जुटा रहने से आपकी भी लगातार कर्मयोगी की नेचर बन जायेगी। कोई भी बात अगर बार-बार की जाती है तो उसके लिए कहते हैं कि यह क्या बड़ी बात है! ऐसे ही अगर हम बार-बार चेक करके उस कमी की जगह बाबा की शक्ति और याद से चेंज करते रहेंगे तो फिर कभी नहीं कहेंगे कि मुझे तो याद भूल जाती है, मेरा तो योग ही नहीं लगता है, अशरीरी नहीं हो पाते हैं। परन्तु इसी बात को माया बार-बार भुलवाके भूले कराती रहती है। यह बात सुनें नहीं सुनें, यह करें या नहीं करें, वो तो हमारे हाथ में है। बहुतकाल के संस्कार बाधा डालते रहते हैं, जिसके कारण निरंतर योग में अन्तर आ जाता है। और जब तक निरंतर अभ्यास नहीं करेंगे तब तक आप जिस समय चाहें एक सेकण्ड में अशरीरी बन जाये, वो नहीं हो सकेगा। अच्छा या बुरा संकल्प चलाने की आदत होगी तो आप अशरीरी बनने की कोशिश करेंगे, वो संकल्प की आदत आपको संकल्प में ले आयेगी, इसीलिए बाबा समय प्रमाण यह डायरेक्शन बार-बार दे रहा है कि जिस समय जिस कार्य के लिए सोचते हो, जिस कार्य के लिए जितना समय फिक्स करते हो, उतना समय उस कार्य को पूरा एक्यूरेट करो। जिस समय जो काम कर रहे हो, उस समय फुल वही अटेन्शन हो यानि जिस समय जो काम कर रहे हैं, उसी में ही बुद्धि हो। योग और कर्म दोनों का बैलेंस रखो। कई कहते हैं कर्म करते कर्म में अटेन्शन चला जाता है तो कर्म थोड़ा नीचे ऊपर हो जाता है। अगर काम करते हुए हम परमात्मा को याद करेंगे तो परमात्मा द्वारा हमको शक्ति मिलेगी। उस परमात्म शक्ति के आधार से आत्मा को याद तो आयेगी ही। तो आप सोचो हमारा काम अच्छा होगा या बुरा? कई कहते कामकाज करते दिमाग चलाते तो याद भूल जाती है लेकिन परमात्म याद से और अपने को राजा समझके कर्मेन्द्रियों से काम कराने से काम अच्छा हो जायेगा, कोई नुकसान नहीं होगा। बाबा की शक्ति मिलेगी।

तो अशरीरी बनने के लिए कोई भी चीज़, शरीर की या बाहर की कोई भी हद की विनाशी चीज़ हमारे मन को अपने तरफ खींचे नहीं। समझो मक्खी आई या कोई भी बात आई लेकिन हमारे मन बुद्धि को वह बात खींचे नहीं। अच्छा मक्खी आयी मैंने हटाया, हमारा मन क्यों हटे? मन हमारा मनमनाभव। मन अगर बातों की आकर्षण में आ जाता है तो कहते हैं यह कर्मयोग नहीं है, अशरीरी बनो। अशरीरी माना शरीर भूल जाए, इसका मतलब यह नहीं है। शरीर भान अपनी तरफ खींचे

नहीं। बाबा से मन निकल करके व्यर्थ संकल्पों में अटक जाये, यह राँग है। काम करते हुए मैं बाबा की हूँ, बाबा मेरा है, इस खुशी के अनुभव में रहें। कौन है और कौन मिला है? क्या दिया है? उससे हम क्या बनें हैं? तो अशरीरी अवस्था का अनुभव करने के लिए पहले यह सब चेकिंग करो। किसी भी प्रकार से व्यर्थ की आदत चंचल बना देती है इसलिए व्यर्थ को जब तक समर्थ संकल्प नहीं दिया है यानि जगह नहीं भरा है, तो मन कभी भी अचल नहीं होगा। बाबा कहते हैं मुरली है शुभ संकल्पों का खजाना। अगर व्यर्थ चलता है तो कम से कम पूरी मुरली नहीं तो धारणा का सार, वरदान और स्लोगन ही पढ़ लो यानि बाबा की मीठी-मीठी बातों को याद करो, ऐसी ऐसी विधियाँ अपनाओ तभी अशरीरी बन सकेंगे।

लास्ट घड़ी हमारे को पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट मिलना है अभी तो कभी कैसे, कभी कैसे चल रहे हैं... यह तो बाबा जाने और हम जानें। लेकिन लास्ट घड़ी जो आनी है, उसमें अचानक चारों तरफ कुछ न कुछ होता रहेगा। अन्त के समय हर चीज़ अति में जानी है। तो ऐसे टाइम पर आपको एक सेकण्ड अशरीरी बनने में लगे। और अगर हमारा चारों तरफ में से किसी तरफ अटेंशन (ध्यान) चला गया तो पास विद ऑनर तो गया, फिर वो थोड़ी सेकण्ड आयेगा इसीलिए राजा (मालिक) बन करके शरीर को, मन को चलाओ। तो हमारी एम यही हो कि पास विद ऑनर होना है और माला का मणका बनना ही है। तो इतना निश्चयबुद्धि और नशे में रहेंगे, अभ्यास करते रहेंगे तो अवश्य होंगे। जो कल्प बीत गया, उसमें मैं ही विजयी था, मैं ही हूँ और मैं ही हर कल्प में बनूँगा, ऐसा नशा होना चाहिए, और कौन बनेगा, हम ही तो बनेंगे। तो इस नशे और निश्चय से पुरुषार्थ हो तो हमारा संकल्प बाबा पूरा नहीं करे, यह हो ही नहीं सकता। अहंकार से नहीं, रूहानी नशे से अगर हम इस निश्चय में चलते हैं तो भगवान को हमें आगे रखना ही पड़ेगा। यह अभिमान नहीं लेकिन प्रैक्टिकल रूहानी निश्चय का रूहानी नशा होना चाहिए।

दिल की मुस्कराहट चेहरे पर आपेही आती है और वह हर्षितमुख चेहरा हमेशा सेवा का साधन बनता है। प्राप्ति वाली शक्ल कैसी होगी, खुशी हमारे जीवन की मिलकियत है इसलिए इसे कभी गँवाना नहीं चाहिए। कोई तो बीती हुई बातों को रिपीट करने से परेशान होते रहते हैं, खुशी गुम हो जाती है और खुशी गँवाना माना हेल्थ, वेल्थ, हैपी तीनों गँवाना। खुशी जैसी खुराक नहीं है। खुश रहो और खुशी बाँटो, जितनी बाटेंगे उतनी बढ़ेगी। अशरीरी बनने के लिए मन को बिजी रखने का ख्याल जरूर रखना क्योंकि मन ही धोखा देता है और दूसरा कभी शक्ल ऊपर नीचे नहीं हो। कुछ भी हो जाये चिंता करने से कुछ मिलने वाला नहीं है। सोचने से कुछ बन जायेंगे क्या! जो बीत चुका उससे क्या बनेगा? चिंता मिलेगी बस और कुछ नहीं मिलेगा। तो यहाँ मधुबन से दृढ़ संकल्प करके जाओ, मुझे अपना चेहरा रूहे गुलाब जैसा रखना रखना है। अच्छा।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"सम्पन्नता को समीप लाना है तो बाबा के समान निष्कामी, निरहंकारी बनो"

(15-7-06)

बाबा की पाण्डव सेना बैठी है। शक्तियों की महिमा अपनी है, महावीरों की महिमा भी कम नहीं है। पांच पाण्डवों में भी हरेक की खूबी अपनी है। पाण्डवों के पांचों ही गुण हरेक में आ जायें। भीम भण्डारी सम्भालता है। अर्जुन ज्ञान सुनते-सुनते नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा तक लाने की धुन लगाके बैठा है। नकुल कॉपी करने में होशियार है, सहदेव सदा सहयोगी है। सतधर्म और राज्य के हरेक गुण युद्धिष्ठिर के साथ-साथ हर एक पाण्डव में हैं और पाण्डवपति साथ है। शिवबाबा की शक्ति साथ न होती तो कदम आगे न बढ़ा सकते। कदम-कदम बाबा को फालो करते। हमारे सामने तो दिनरात, स्वप्न में चाहे संकल्प में बाबा के चरित्र और बाबा के बोल ही हैं।

पुरुषार्थ के बगैर एक मिनट भी हमारा न जाये, इसमें न सुस्ती है, न बहाना है। पुरुषार्थ करने का टाइम नहीं है यह शब्द हम नहीं कह सकते हैं। मैं बिजी हूँ, यह सरकमस्टान्स है। अक्ल नहीं है। याद और सेवा दो ही हमारे अन्दर हैं। याद भी हमारी ऐसी हो जो बाबा भी मेरे को याद करे, तब कहेंगे मेरी याद ठीक है। तो चेक करते रहो कि बाबा को मेरी याद आती है? भाग्यविधाता के हाथ में हाथ दिया है तो उसने भी साथ दिया है। और फिर गैरन्टी है जो बाबा ने मुझ आत्मा के प्रति महावाक्य उच्चारे हैं, वो काम कर रहे हैं। और किसके वाक्य अन्दर जा नहीं सकते। अगर और किसी के बोल हमारे अन्दर गये तो बाबा के बोल काम नहीं करते हैं, बड़ा खबरदारी की बात है। मैं किसी को

समझाऊं, मैंने देखा यह भी व्यर्थ है। उनसे ज्यादा शुद्ध संकल्प, श्रेष्ठ भावना काम कर रही है। अगर चिन्तन में लाते तो जो बोलते हैं वो असर नहीं करता है। उसके बजाए पहले हमारा व्यर्थ समाप्त हो। जितना समय मैंने किसी को समझाने का चिन्तन किया, उतना समय मुझे उसे समझाने का चांस ही नहीं मिलता। अगर मैं उसको समझाऊंगी तो वो कहेगी कि तुम कौन हो! मैं जानती नहीं हूँ क्या, तुमको सही बात का पता नहीं है! तो क्या फायदा हुआ। उसके बजाए श्रेष्ठ संकल्प, समर्थ संकल्प का साथ देना, साथी बनाना, इससे आज नहीं तो कल चेन्ज होगा। इसमें धीरज की बात है, समय लगेगा पर संकल्प की क्वालिटी, श्रेष्ठ भावना, शुद्ध भावना को अगर मैंने चेन्ज किया तो जो बात सामने है उससे मैं सहज पार नहीं हो पाऊंगी। मेरे को पार होना है। ड्रामा अनुसार बात तो पार हो गयी, लेकिन चिन्तन में अभी भी है तो मेरी स्थिति कैसी है। अगर मेरी स्थिति ऐसी रही तो उसको फायदा नहीं होगा। अगर श्रेष्ठ भावना, शुद्ध भावना होगी तो फायदा होगा। थोड़ा भी इफेक्ट में आई तो मेरा डिफेक्ट हो जायेगा, इसमें स्वयं को सम्भालना है।

हर्षितमुख रहना पुरुषार्थ की सफलता है। हर्षितमुख तब होगा जब मैं आत्मा शान्त हूँ, मेरा स्वधर्म शान्त है, मेरा बाबा प्यार का सागर है। जैसे बाबा मुस्कराते सब काम करता है। मुस्कराते-मुस्कराते बाबा समझ भी देता है तो शक्ति भी देता है। अगर इतना बाबा से प्यार है, तो कहता है मैं बैठा हूँ। वो शक्ति देता है मुस्कराने की।

ड्रामा की हर सीन जो सामने आती है, सब दिन होत न एक समान। पढ़ाई है लेकिन परीक्षा न हो तो पास कैसे होंगे! इसमें भी एक ईर्ष्या, दूसरा निराशा है, कभी प्रसन्न नहीं रहते। अगर खुद प्रसन्न हैं, परिवार प्रसन्न है, सेवा में प्रसन्न हैं तो बापदादा प्रसन्न है। ड्रामा में जो बात सामने आयी, खेल न समझा तो हार खाई, सीन बहादुर हो गयी। अपमान ने इफेक्ट में लाया तो जो स्वमान में रहने की बाबा ने अच्छी सुत्ती घोट के पिलाई है, उस पर विचार सागर मंथन करने की आदत ही नहीं है। अगर सूक्ष्म में जाकर देखें तो पढ़ाई का जो सार है वह बहुत काम कर रहा है। विस्तार में थोड़ा भी जाते हैं तो संकल्प की क्वालिटी नहीं रहती। निष्काम सेवा की स्थिति से नीचे आ जाते। सेवा में निरहंकारी भी नहीं रह सकते। एक ही टाइम पर कई प्रकार की सेवा सामने हैं। बेहद के सेवाधारी हैं। पांच तत्वों के पार रहते हैं। जैसे बाबा बैठा है अनेक प्रकार के बच्चों को देखता है, दु:खियों की पुकार सुनता है। हम आत्मा को क्या करना है? हमें कोई जंगल में नहीं जाना है।

बाबा हमारे से क्या चाहता है! मैं तो फूल बनूँ, पर ऐसे फूलों को बाबा के सामने ले आऊं। बाबा ऐसा है जो कभी हमारे अन्दर चाहना पैदा होने नहीं देता है। बाबा जो चाहता है, बाबा को जो कराना है, उसमें हाँ जी, मुख से भले नहीं करो, पर हाज़िर रहो। एक बार बाबा ने मुझे कहा हज़ूर कोई हुकुम है। तुमने हाँ जी कहा है ना, तो हज़ूर सदा हाज़िर रहेगा। मुझे अपने आपको सम्भालना है, जो बाबा ने कानों में सुनाया है वही सोचना है। वही करना है, बस। बाबा ने खुद करके दिखाया है। बाबा जैसी सेवा कोई कर नहीं सकता। पर सेवा करते जितना निरहंकारी, निष्कामी रहा है, हमें भी उन जैसा रहना है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“ब्रह्मा बाप समान निरहंकारी और निर्मानचित्त बनना है तो अपने को ओबीडियन्ट सर्वेन्ट समझो” (1999)

1) हमारा बाबा कितना निरहंकारी है, बच्चों को कहता है बच्चे मैं तुम्हारा ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। जब बाबा ही ओबीडियन्ट है तो हम अपने से पूछें कि हम भी उनके समान निरहंकारी और निर्मानचित्त रहते हैं? जब ऊंचे ते ऊंचा बाप, इतनी ऊंची अथॉरिटी कहता मैं तुम्हारा सर्वेन्ट हूँ, तो हमें कितना निरहंकारी होना चाहिए! जब अपने को सेवाधारी समझते तो स्वत: निरहंकारी पन की स्टेज आ जाती है।

2) अपने को निमित्त समझने से करन-करावनहार बाप स्वत: याद आता हैं। जब सेवाधारी कहते तो हम किस सेवा के निमित्त हैं। जैसे हॉस्पिटल में नर्सेज, अपनी नर्स की सेवा समझ ओबीडियन्ट हो सेवा करती, वैसे हम किस चीज़ के सेवाधारी हैं। अगर सोचते हम दूसरे को संदेश देने वाले सेवाधारी हैं, ऐसा समझने वाले दूसरे को संदेश पहुंचा देते लेकिन स्वयं को भूल जाते। हम स्व के भी संदेशी हैं, स्व के भी सेवाधारी हैं, यह भूल सिर्फ दूसरों के सन्देशी बन जाते हैं। बाबा ने कहा तुम मेरे मददगार हो, सृष्टि को पावन बनाने में। तो जो दूसरे को पावन बनायेगा वह खुद भी पावन रहेगा या खुद पतित दूसरों को पावन बनने का संदेश देगा?

3) ब्रह्माकुमार कुमारी माना पावन बाप के पावन बच्चे, पावन बनाने वाले। तो खुद ही खुद से पूछो – मेरी मन्सा-वाचा-कर्मणा पावन है? ऐसे नहीं कर्मणा में तो हैं लेकिन मन्सा में नहीं.... बाबा

ने पूरा ही छोड़ने को कहा है, एक को नहीं। ऐसे नहीं लोभ छोड़ो, मोह भले रखो। अन्त का मंत्र है स्मृर्तिलब्ध: नष्टोमोहा। जब तक ये मन्त्र प्रैक्टिकल में नहीं तब तक दूसरों की क्या सेवा करेंगे। हरेक पहले यह सवाल पूछे कि बाबा ने मुझे मंत्र दिया है स्मृर्तिलब्ध: तो मैं हूँ? मेरी यह स्थिति बाबा के डायरेक्शन के अनुसार है या मैं इस स्थिति से बहुत दूर हूँ? स्मृति माना बाबा याद आ गया। नष्टोमोहा माना विजयन्ती। मैं अगर सबको पावन बनाने वाली बाप समान सर्वेन्ट हूँ तो मैं नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हूँ या कहीं बुद्धि जाती है? कई कहते मेरी वृत्ति जाती है। मैं पूछती जबसे ब्रह्माकुमार कुमारी बने तो क्या उस दिन से यह संकल्प भी उठा कि मैं जाकर शराब टेस्ट करूं। उसमें वृत्ति क्यों नहीं गयी? कभी ऐसी वृत्ति गई कि मैं मलेच्छों का खाना खाकर देखूं कि इसका क्या टेस्ट है? कोई की भी वृत्ति में यह स्वप्न तक भी आया? क्या ये अन्दर में आता कि होटल में जाकर 12 बजे तक डांस तो करके देखें। क्यों नहीं गये? संग में आकर किसी ने डान्स आदि जाकर किया हो तो हाथ उठाओ। जब यह इच्छायें नहीं उठती फिर ये इच्छा क्यों उठती कि फलानी की देह में मेरी बुद्धि जाती! मुझे माया के तूफान आते! इसमें क्यों कहते मेरी वृत्ति जाती है? जब वह वृत्ति नहीं उठती तो यह क्यों उठती है?

4) माया के कोई भी तूफान तब आते हैं जब अपने को सर्वेन्ट नहीं समझते। अगर हम विश्व को पावन बनाने के निमित्त सर्वेन्ट हैं तो क्या मेरी वृत्ति जा सकती है! अगर जाती है तो मैं ओबीडियन्ट हुई? जब बाबा ने कह दिया कि तुम बच्चे इस दुनिया से मर गये, मैं महाकाल आया हूँ तुमको घर ले जाने, धुन है घर जाने की, यही धुन रहे तो वृत्ति जा नहीं सकती। कहते हैं मैं चाहता हूँ मेरी वृत्ति न जाए - लेकिन चली जाती है। मैं कहती तुम चाहते हो तो वृत्ति जाती है। नहीं तो मेरी धुन है - मेरा बाबा, वृत्ति में है घर फिर वृत्ति कैसे जा सकती है। जिसे धुन लगी हुई है वही ओबीडियन्ट है। वही मन्सा-वाचा कर्मणा सेवाधारी रह सकता है। वह अपनी वृत्ति, दृष्टि, कर्म सबसे इस विश्व को स्वर्ग बनायेगा। इसी धुन में रहने वाले की वृत्ति कहाँ भी जा नहीं सकती।

5) कोई कहे मोह नहीं टूटता तो कहो हे बाबा मैंने नष्टोमोहा का मन्त्र नहीं पढ़ा है.... कहते हैं देहधारियों में वृत्ति जाती है, मेरा सवाल उठता क्यों? आप कहते हम कोशिश करते, मैं कहती तुम ओबीडियन्ट नहीं। आप कहते हम पुरुषार्थ करते, मैं कहती तुम कुछ नहीं करते। निश्चय बुद्धि ही नहीं हो। पूरा निश्चयबुद्धि कब बनेंगे? क्या मरने के बाद? निश्चयबुद्धि विजयन्ती अभी की बात है या बाद की? क्या बाबा के यह बोल रांग हैं कि बच्चे निश्चयबुद्धि विजयी। अगर नहीं तो कम्पलीट विजयी बनकर दिखाओ।

6) अगर मैं किसी में अटैच होउंगी तो क्या दूसरे को पावन बना सकूंगी! खुद फंसा हुआ दूसरे को फांसी से कैसे छुड़ायेगा। जब न्यूज़ सुनते कि फलाने को फांसी की सजा मिली तो खयाल आता फांसी! लेकिन जब खुद कहते मेरे से यह विकार जाता नहीं, वृत्ति जाती नहीं तो यह भी तो फांसी की सजा है। फांसी के तख्ते पर लटके हुए हो। अगर आज फांसी के तख्ते से उतर बापदादा के दिल तख्त पर नहीं बैठे तो फिर कब बैठेंगे!

7) मैं तो कहती हूँ – माया तू मेरे पास क्यों नहीं आती! मुझे भी तो कुछ अनुभव करा। मैं तो माया को चैलेन्ज करती हुँ, मैं अपने बाबा की हूँ, मैं दुनिया की थोड़ेही हूँ। आप दुनिया को देखते हो तो वह ऐसे-ऐसे करती है। हमारे पास दुनिया को देखने के लिए आंखे हैं ही नहीं। बाबा ने हमारा तीसरा नेत्र खोल दिया। देहधारियों को देखने वाला नेत्र ही नहीं है। अगर अपने को ओबीडियन्ट समझते तो इसमें ओबीडियन्ट बनो।

8) ओबीडियन्ट माना आज्ञा पालन करने वाला फेथफुल। मैं अगर ओबीडियन्ट हूँ तो बाबा के डायरेक्शन के खिलाफ यह सब मेरी गलतियां क्यों होती। जब हम सर्वेन्ट है तो सेठ की बात क्यों नहीं मानते। जब सेठ से बुद्धि हट जाती तो भाव-स्वभाव में आकर झगड़ा करते। बाबा कहता बच्चे निर्मान बनो, नम्र बनो और हम होते गर्म। तो क्या मैं ओबीडियन्ट हुई! हमें तो बहुत-बहुत मीठा बनना है।

9) कई ऐसे भी हैं जो अनुमान की दुनिया बनाकर बैठते हैं। भूख होती है मान की, फिर बातें दूसरों की अनु जैसी निकालते रहते। फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा बोलता, कई बार मिसअन्डरस्टैन्डिग में अनुमान का शिकार हो जाते। अनुमान की बीमारी कईयों को शिकार कर मार देती है। अन्दर समझते फलाने ने मुझे इस नज़र से देखा, वह मेरे लिए ऐसा सोचता..... मैं तो ऐसे इज्जत से चलने वाला हूँ। मुझे यह ऐसा कहते, फिर जाकर घर में बैठ जायेंगे, तो शिकार हो गये ना। मुरली में तो बाबा ने ऐसे कभी नहीं कहा कि तू जाकर घर बैठ जाओ.... मिसअन्डरस्टैन्ड में मिस हो जाते। अरे तुम कुमार कुमारी रहो, मिस क्यों बनते! बाबा ने हमें सीढ़ी उतरने से बचा लिया, अकेला हूँ, अकेले का हूँ, न कोई दुश्मन है, न किसी से द्वेष है। हम कितने लकी हैं, एक के हैं, एक हैं... अपने लक की महिमा करो। मुझे बचा लिया बाबा ने.... फिर क्यों कहते वृत्ति जाती? आज यह संस्कार नक्की लेक में डुबोकर जाओ। इन्हें दूध पिलाकर मोटा नहीं करना। इन्हें समाप्त करके जाओ। बुद्धि में दृढता हो कि हम किसके हैं तो माया आ नहीं सकती। आप उनका स्वागत क्यों करते हो! दरवाजा क्यों खोलते! स्वागत करेंगे तो मार डालेगी। हमारा जन्म बदला, हमारा नाम, धर्म, कुल, कर्म, सम्बन्ध, सब कुछ बदल गया। हम सारी दुनिया से बदल गये, हम इस दुनिया को देखें ही नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।